International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 5; September 2017; Page No. 79-80

उषा प्रियंवदा जी की कहानियों में पारिवारिक समस्या का चित्रण

अंजू डागर
हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

प्रस्तावना

स्वातं=योतर भारत में नारी ने अपनी एक अलग पहचान बनायी है। घर की चारदीवारी में बंद रहने वाली स्त्री अचानक घर से बाहर आकर अनेक क्षेत्रें में कार्यरत दिखाई पड़ने लगी। आज का युग महिला सशक्तिकरण का युग है। युगों से भोगे अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाने की शक्ति महिलाओं को आधुनिक परिस्थितियों ने प्रदान की है। आधुनिक युग की प्रगतिशील लेखिकाओं में उषा प्रियंवदा जी का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अपने लेखन में स्त्री विषयक चिंतन को तेजी से उभारा है। इनकी कहानियों में स्त्री के सभी रूपों का वर्णन हुआ है। उषा प्रियंवदा जी ने केवल भारतीय पृष्ठभूति की ही कहानियाँ नहीं लिखी है अपितु विदेशी पृष्ठभूमि में प्रवासी भारतीय की स्थितियों, उनके अकेलेपन,घुटन, अपने देश से दूर रहने की जदद्ोजहद का सजीव चित्रण किया है।

उषा प्रियंवदा जी आधुनिकता बोध की कथाकार है। विशेष परिस्थितियों में अकेलेपन, बेबसी, हार और लाचारी की मानवीय नियति को आकलित करती है। उनके पात्र न कभी ऊँची आवाज में शोर मचाते है और न ही कोइ असुविधा पैदा करते हैं, फिर भी जिंदगी की उन सच्चाइयों को उद्घाटित करती है जिनसे होकर गुजरना हर किसी के लिए जरूरी है। इस प्रकार इनकी कहानियों में वैविध्य और आधुनिक जीवन के अनेक आयाम दिखाई पड़ते है।

टूटते हुए पारिवारिक सम्बंध, बनते हुए नवीन सम्बंध, नारी का आर्थिक संघर्ष, नारी का प्राचीन भावभूमि से निकलकर नवीन भाव भूमि में प्रवेश, नारी स्वत्व की तलाश आदि उनकी कहानियों में मुख्य विषय के रूप में आये है। उषा प्रियंवदा जी ने सामाजिक चुनौतियों को बड़ी सूक्ष्मता से समझा है, और उसकी अभिव्यक्ति अपनी कहानियों में बड़ी कुशलता से की है। ये समस्यायें वैयक्तिक तथा सामाजिक दोनों है। उनकी कहानियों में पारिवारिक विघटन के दो रूप-संयुक्त परिवारों का टूट-कर लघु परिवारों में परिवर्तित होना और एकल परिवार का लघुतम रूप में परिवर्तित होना।

'वापसी' कहानी उषा प्रियंवदा जी की प्रसिद्ध कहानी है। जिसके प्रमुख पात्र गजाधर बाबू जब अवकाश ग्रहण कर आराम व आनंद की जिंदगी बिताने का

स्वप्न संजोकर घर आते हैं परंतु वहाँ उन्हें घोर उपेक्षा का सामना करना पड़ता है।बड़ा लड़का उनके आने के पहले घर का मालिक बनकर रहता था। अब उसे बात-बात पर रोकना बुरा लगता है। वह अलग रहना चाहता है। वसन्ती भी पड़ोस में जाने से रोके जाने की वजह से नाराज रहती है। पत्नी को भी उनका बोलना अच्छा नहीं लगता। सब उन्हें धनोपार्जन का निमित्त मात्र समझते हैं। उन्हें लगता है, उनकी उपस्थिति उस घर में ऐसी असंगत लगने लगी थी जैसे सजी हुई बैठक में उनकी चारपाई थी।

'नाश्ता कर, गजाधर बाबू बैठक में चले गए। घर छोटा था, और ऐसी

व्यवस्था हो चुकी थी कि उसमें गजाधर बाबू के रहने के लिए कोई स्थान न बचा था, जैसे किसी मेहमान के लिए कुछ अस्थायी प्रबंध कर दिया जाता है उसी प्रकार बैठक में कुर्सियों को दीवार से सटाकर बीच में गजाधर बाबू के लिए पतली सी चारपाई डाल दी गई- ''गजाधर बाबू उस कमरे में पडे-पडे कभी-कभी अनायास ही उस अस्थायित्व का अनुभव करने लगते।'उनका बेटा अमर कहता है-

''बूढ़े आदमी है, चुपचाप पड़े रहें हर चीज में दखल क्यों देते हैं।''

इससे पता लगता है कि बदलते परिवेश में वृद्ध पिता अकेलेपन व टूटन का शिकार हो रहे है। बुजुर्ग पीढ़ी की यह नियति अत्यंत शोचनीय है। उन्होंने अनुभव किया कि वह पत्नी व बच्चों के लिए केवल धनोपार्जन के निमित्त मात्र है। रिटायर होने के बाद वे परिवार के बोझ बन जाते हैं और फिर से नौकरी की तलाश में निकल जाते हैं।पत्नी तक को अपने बूढ़े पति का एहसास नहीं। गजाधर बाबू ने स्नेह की आकांक्षा रखी थी, वह न बेटी-बेट से मिली। बल्कि दो चार दिन भी किसी ने उनके सुख सुविधा की चिंता नहीं की। अपने ही घर में नकारे जाने के कारण उनमें बेहद अकेलापन उभरने लगता है। आज के समय में यह स्थिति हो गई है कि यदि माता-पिता अपने परिवार के सदस्यों के साथ हँसी खुशी वक्त बीताना चाहते हैं तो उन्हें अपने पुराने मूल्यों को छोडना होगा।

'दृष्टि-दोष' कहानी की चंद्रा अपने पति सास से इसलिए सामंजस्य स्थापित

नहीं कर पाती क्योंकि उन दोनों के पारिवारिक रहन-सहन के स्तर में काफी अंतर है। साम्ब एक गरीब तथा परम्पराओं को मानने वाले परिवार का मेधावी युवक है।वह अपनी मेहनत से ऊँची नौकरी पाता है। दूसरी तरफ चंद्रा एक रइस आधुनिक परिवार की लड़की है। उच्चवर्गीय परिवार की लड़की मध्यवर्गीय परिवार के संस्कारों को आत्मसात नहीं कर पाती और पारिवारिक सम्बंधों में तनाव उत्पन्न होता है। पति, पत्नी के इच्छानुसार अपने परिवार से सम्बंध नहीं तोड़ता। अतः पत्नी सदा के लिए अपने माता-पिता के घर लौट जाती है। रहन-सहन के स्तर में अंतर के कारण हुआ विघटन इस कहानी में दिखाया गया है।

'जिंदगी और गुलाब के फूल' कहानी पारिवारिक सम्बंधों में ह्रास का एक जीवंत उदाहरण है, जो आजकल किसी भी परिवार में देखने को मिल जाता है। आर्थिक स्वार्थ मनुष्य को इतना अंधा कर देता है कि उसको कोई संबंध, कोई

रिश्ता, कोई भावना महसूस नहीं होती। सुबोध बेरोज़गार होने की वजह से अपनी छोटी बहन, जो पहले उससे डरती थी और प्यार भी करती थी, द्वारा बहुत उपेक्षित है।सुबोध के कमरे की हर अच्छी चीज़ अपने कमरे में ले जाने को वह अपना अधिकार समझती है। परंतु सुबोध का मन है कि

''उसका पुरुष हृदय घर में वृंदा की सत्ता स्वीकार न कर पाता था।''

उसके बेरोजगार होने से घर में इतना परिवर्तन हो गया है कि अब उसके देर से आने पर हमेशा ठंडा खाना ही मिलता है, जबकि पहले माँ और वृंदा उसके इंतजार में बैठी रहती थी, वृंदा हमेशा बाद में खाती थी। सुबोध की दिनचर्या के ही अनुसार घर के काम होते थे पर तब वृंदा नौकरी नहीं करती थी। सुबोध भी बेकाम न था। अब खाना वृंदा की सुविधा के अनुसार बनता है परंतु वह मजबूर है। उसके पास

कमाई का कोई जरिया नहीं रहा इसलिए मौन रहकर अपने आप से लड़ने के अतिरिक्त वह कुछ नहीं कर सकता।आधुनिकता का अभिशाप है कि बेराज़गारी और बेरोजगार के प्रति किसी
को भी सहानुभूति नहीं होती।
इसी प्रकार 'कितना बड़ा झूठ' कहानी नए संबंधों तथा पति-पत्नी के ढोंग की कहानी है। 'प्रतिध्वनियाँ, 'ट्रिप', 'नींद', 'सुरंग', 'स्वीकृति' आदि कहानी टूटते हुए पारिवारिक संबंध, बनते हुए नए संबंध, नारी अस्तित्व व आत्मनिर्भरता तथा प्रेम व यौन सम्बंधों की समस्याओं की कहानी है।

'कितना बड़ा झूठ' कहानी मुख्य रूप से विदेश में बस गई आधुनिक

नारियाँ स्वच्छंद यौन सम्बन्ध की कितनी हिमायती हो गयी है, यह इस कहानी में देखने को मिलता है। 'कितना बड़ा झूठ' कहानी की किरन भी अपने पति से छुपकर मैक्स नामक विदेशी से शारीरिक सम्बंध स्थापित करती है। लेकिन जब मैक्स विवाह कर लेता है तब किरन को लगता है कि मैक्स ने उसके साथ छल किया। अपने पति से किये गये छल का ध्यान उसे नहीं आता।

'ट्रिप' कहानी में पति अपनी पत्नी के अवैध सम्बंधों को दो शर्तों पर स्वीकार कर लेता है कि ''वह अपने अफेयर चुपचाप कंडक्ट करेगी, दूसरे इस आयु में वह नए बच्चे की जिम्मेदारी नहीं लेगी।''

'स्वीकृति' कहानी के पति-पत्नी रूचि में अंतर के कारण एक दूसरे से दूर हो जाते हैं। पति अपनी नव विवाहिता पत्नी को सिर्फ पैसे कमाने के साधन के रूप में देखता है। लेकिन पत्नी-पति के साथ रहकर उसके साहचर्य का सुख उठाना चाहती है। परिणामस्वरूप दोनों के सम्बंधों में तनाव उत्पन्न हो जाता है।

'मान और हठ' कहानी का मुकुल भी पत्नी अमृता की भावनाओं से अधिक पैसे को महत्व देता है। वह हर समय व्यंग्य वाणों से उसे आहत करता रहता है। उनके बीच सम्बंधों की कटुता निम्न वाक्यों से पता चलती है। मुकुल कहता है-

''मैं तुम्हारे जैसी हजारों को खरीद सकता हूँ।''

अमृता के स्वाभिमान को चोट पहुँचती है, तो वह भी तनकर खड़ी हो जाती है और कहती है आपको अपनी दौलत का घमंड है तो मैं भी आपको दिखा दूँगी। दोनों का ही अहं उन्हें सम्बंध तोड़ने के लिए मज़बूर करता है।

'सागर पार का संगीत' कहानी की देवयानी अपने पति के अत्यधिक व्यस्त

रहने के कारण अकेली पड़ जाती है और विदेश में घुटन अनुभव करती है। इससे मुक्ति पाने के लिए वह स्वदेश वापस लौटना चाहती है।
उषा प्रियंवदाजी ने टूटते हुए पारिवारिक एवं दाम्पत्य सम्बंधों की ट्रेजेड़ी का सूक्ष्म चित्रण किया है। उषा जी की 'नई कोपले', 'पैरम्बुलेटर', 'मेनका रंभा और उर्वशी', 'आश्रिता' आदि कहानियों ने संयुक्त परिवार के विघटन को व्याख्या द्वारा अभिव्यक्ति प्रदान की गई है। 'सम्बंध', 'सुरंग' केंद्रीय परिवारों के विघटन को प्रस्तुत करती है।, 'मोहबंध', 'जाले', 'कटीली छाहँ', 'दृष्टिदोष', 'कितना बड़ा झूठ', 'सागर पार का संगीत' आदि कहानियाँ दाम्पत्य विघटन को प्रस्तुत करती है।उषा प्रियंवदा जी की रचनाएँ विदेशी पृष्ठभूमि वाली कथाएँ है। इन कथाओं का अध्ययन करते हुए विदेशी संस्कृति को पहचानने की राह खुलती है। साथ ही बिखरी भावनाएँ, टूटते घर, दृष्टिगोचर होते हैं। वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक ढंग से सम्बद्ध देशों की सांस्कृतिक्ता और सामाजिकता का अध्ययन करने से अनेक ऐसी विशेषताएँ आती हैं जो विदेशों में रह कर महसूस होती है तथा भारत लौटकर भी मन से भुलाए नहीं जाते। उषा जी विदेशों में रहकर जीवन जीते हुए व परिवेश को परखते हुए अपनी कृतियों को जीवंत बनाने में सफल रही है।
अतः हम कह सकते है कि उषा जी ने पूरी ईमानदारी के साथ समाज की कुरीतियों, विसंगतियों, विडंबनाओं को सामने लाकर जागृत करने का प्रयास किया है। वे एक संघर्षशील कथाकार की भाँति, रूढ़ियों, जर्जर मान्यताओं, निरर्थक परंपराओं पर चोट करती हुई व्यंग्य को आधार बनाती है। उनकी हर कहानी अपने भीतर किसी गंभीर समस्या या उसके समाधान को छुपाए रखती हैं।

सन्दर्भ सूची

1. सन्दर्भ ग्रन्थ
2. सम्पूर्ण कहानियां उषा प्रियंवदा
3. आधार ग्रन्थ
4. कहानी नयी कहानी ,नामवर सिंह
5. स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाएं
6. कथाकार उषा प्रियंवदा डॉ सुभाष पवार
7. वेब लिंक
8. उषा प्रियंवदा -विकिपीडिया
9. पत्रिका
10. हिंदी चेतना (प्रवासी पत्रिका)